RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 जनवरी 2023

बाल विज्ञान पत्रिका, जनवरी 2023

चकमक

नया साल मुबारक!

ठण्ड के मौसम में भारत के उत्तरी मैदानी इलाकों में बर्डवॉचिंग

मूल्य ₹50

हाथी

वैदेही पाटणे, दूसरी, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चित्र: अमृता

मुझे एक हाथी पसन्द है।
उसका नाम है जम्बो।
मुझे जम्बो हाथी बहुत पसन्द है।
मैं उसके साथ खूब खेलती हूँ।
मुझे उसका रंग पसन्द है।
हम दोनों घूमने जाते हैं।
इसलिए मुझे वो पसन्द है।
जम्बो और मैं साथ में टीवी
देखते हैं और गाना गाते हैं।

अंक 436 • जनवरी 2023

चकमक

इस बार

हाथी – वैदेही पाटणे 2
कौवा लड़का – तारो याशिमा 4
वह लड़की जो समय को... – निधि गुलाटी 9
साँप-साँप – अधिराज जुगरान 12
कला के आयाम – शेफाली जैन 14
अन्तर ढूँढो 18
2023 का कैलेंडर (तुम्हारे लिए) 19
भूलभुलैया 27
सुनने से भी मसले... – अमन मदान 28
माथापच्ची 30
क्यों-क्यों 32
चित्रपहेली 34
मेरा पन्ना 36
तुम भी जानो 43
एक रंग – चन्दन यादव 44

सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

वितरण
झनक राम साहू

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

आवरण: रोहन चक्रवर्ती द्वारा बनाया गया कार्टून

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

कौवा लड़का

तारो याशिमा
अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

जापान के हमारे ग्रामीण स्कूल में, पहले ही दिन एक लड़का क्लास से गायब था। बाद में वो स्कूल के तहखाने में छिपा मिला। हममें से कोई उसे नहीं जानता था। क्योंकि उसका कद बहुत छोटा था, इसलिए हम सब उसे 'चिबि' कहकर बुलाते थे। चिबि का मतलब होता है 'छोटा लड़का'।

उस अजीब-से लड़के को हमारे टीचर से बहुत डर लगता था। इसलिए वो कुछ नहीं सीख सका। उसे बच्चों से भी डर लगता था। इसलिए उसने किसी से भी दोस्ती नहीं की।

पढ़ाई के समय उसे अकेले छोड़ दिया जाता था। खेल के समय भी वो बिलकुल अकेला बैठा रहता था। वो बच्चों की लाइन में हमेशा सबसे पीछे रहता। किसी से मिलता-जुलता भी नहीं था।

जल्दी ही चिबि ने अपनी आँखों को ऐंचना सीख लिया। ऐसा करने से वो जो चाहता, केवल वही देखता। बाकी और कुछ नहीं।

***

चिबि ने समय काटने और अपना मन बहलाने के अनेकों तरीके खोज निकाले थे। क्लास की छत उसके लिए बहुत रोचक जगह थी। वो घण्टों छत को निहारता रहता था।

चिबि को लकड़ी की मेज़ को घूरने में भी बहुत मज़ा आता था। किसी लड़के की कमीज़ पर छपा हुआ नमूना भी चिबि को बहुत आकर्षक लगता था। खिड़की के बाहर देखने के लिए तो पूरे साल अनेकों चीज़ें थीं ही। बारिश में भी उसे खिड़की से आश्चर्यजनक चीज़ें दिखती थीं। चिबि कीड़ों और इल्लियों को निहारता और उन्हें पकड़ता। बाकी बच्चे उनकी तरफ देखते तक नहीं थे।

खेल के मैदान में चिबि अपनी आँखें बन्द करके बैठा रहता और दूर-पास की अनेकों आवाज़ें सुनता था।

इसलिए न केवल हमारी क्लास के बच्चे, पर स्कूल के बाकी छोटे-बड़े बच्चे भी चिबि को बेवकूफ और बुद्धू बुलाते थे।

***

चिबि हर दिन पैदल स्कूल आता था। वह रोज़ एक ही लंच लाता था – भात की गेंद, जो मूली के पत्ते में बँधी होती थी।

चाहे तेज़ बारिश हो या तूफान, चिबि स्कूल ज़रूर आता। बारिश में वो सूखी ज़ेब्रा घास के रेनकोट को लपेटकर आता।

***

धीरे-धीरे करके पाँच साल बीत गए और हम छठवीं क्लास में पहुँच गए। वो स्कूल की अन्तिम कक्षा थी।

हमारे नए टीचर थे – मिस्टर इसोबे। वो हमेशा मुस्कराते रहते थे। वो एक दोस्ताना किस्म के आदमी थे।

मिस्टर इसोबे अपनी क्लास को अक्सर स्कूल के पीछे स्थित पहाड़ी पर ले जाते थे। चिबि को वे सभी जगहें अच्छी तरह पता थीं जहाँ पर जंगली अंगूर और आलू मिलते हैं। यह जानकर मिस्टर इसोबे बहुत खुश हुए। स्कूल के बाग के फूलों के बारे में चिबि को कितना कुछ पता है, यह जानकर भी मिस्टर इसोबे को बहुत ताज्जुब हुआ।

उन्हें चिबि के बनाए काले-सफेद चित्र भी बहुत पसन्द आए और उन्होंने उन्हें क्लास में लटकाया। चिबि जो भी लिखता उसे केवल वो ही पढ़ पाता। पर मिस्टर इसोबे को चिबि की लिखाई इतनी पसन्द आई कि उन्होंने उसे दीवार पर टाँग दिया। जब क्लास में अन्य बच्चे नहीं होते तो वे चिबि से घण्टों बातें करते रहते थे।

उस साल स्कूल के 'प्रतिभा-शो' में जब चिबि स्टेज पर हाज़िर हुआ तो किसी को अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ। "वो कौन है?" "वो बुद्धू भला वहाँ क्या कर रहा है?"

तभी मिस्टर इसोबे ने घोषणा की कि चिबि कौवों की आवाज़ों की नकल करेगा।

“आवाज़ें?” “कौवों की आवाज़ें?” “कौवों की आवाज़ें?”

“कौवों की आवाज़ें।”

सबसे पहले चिबि ने कौवे के नवजात बच्चे की आवाज़ निकाली। फिर उसने माँ-कौवे की आवाज़ निकाली। फिर पिता-कौवे की आवाज़ की नकल की।

उसने वो आवाज़ें निकालीं जो कौए सुबह तड़के निकालते हैं। गाँव में हादसे के समय कौवे कैसी आवाज़ें निकालते हैं, वो भी सुनाईं। जब कौवे खुश और मस्त होते हैं तो वे कैसी आवाज़ें निकालते हैं, वे भी सुनाईं।

उसके बाद हरेक का ध्यान उस दूर-दराज़ के पहाड़ी इलाके की ओर गया जहाँ से शायद चिबि स्कूल आता था।

अन्त में चिबि ने एक पुराने पेड़ पर बैठे कौवे की नकल करने के लिए एक विशेष आवाज़ निकाली। यह आवाज़ उसने अपने गले की गहराई से निकाली – “काऊवात्त! काऊवात्त!”

मिस्टर इसोबे ने हमें बताया कि चिबि ने ये आवाज़ें कैसे सीखीं। चिबि अपने घर से स्कूल के लिए सुबह तड़के ही निकल पड़ता था। और सूरज ढलने के बाद ही वो घर वापिस लौटता था। पूरे छह साल तक चिबि ने रोज़ ऐसा ही किया था।

यह सब सुनकर हममें से हरेक बच्चा यह सोचकर रोया कि इतने सालों में हमने चिबि को कितना परेशान किया था, कितना सताया था। हम कितने गलत थे। बड़ों ने भी अपने आँसू पोंछे और कहा, “हाँ, हाँ, ये एकदम गज़ब है।”

चिबि क्लास में एकमात्र ऐसा बच्चा था जिसे छह सालों में शत-प्रतिशत हाज़िरी के लिए सम्मानित किया गया।

***

स्कूल खतम होने के बाद बड़े लड़के अपने परिवार के काम से अक्सर गाँव में आते। कभी-कभी चिबि भी अपने परिवार द्वारा बनाए कोयले को बेचने गाँव आता था।

पर अब उसे कोई चिबि नहीं बुलाता था। हम सब उसे ‘कौवा लड़का’ बुलाते। नाम सुनकर चिबि अपना सर हिलाता और मुस्कराता, जैसे उसे यह नाम पसन्द आया हो।

काम खतम होने के बाद वो अपने परिवार के लिए कुछ चीज़ें खरीदता था। फिर किसी बड़े आदमी की तरह कन्धों को गर्व से चौड़ा किए पहाड़ियों के उस पार बसे अपने घर के लिए वो निकल पड़ता।

और पहाड़ की पगडण्डी के मोड़ के बाद से कौवे की एक आवाज़ आती – खुशी वाली।

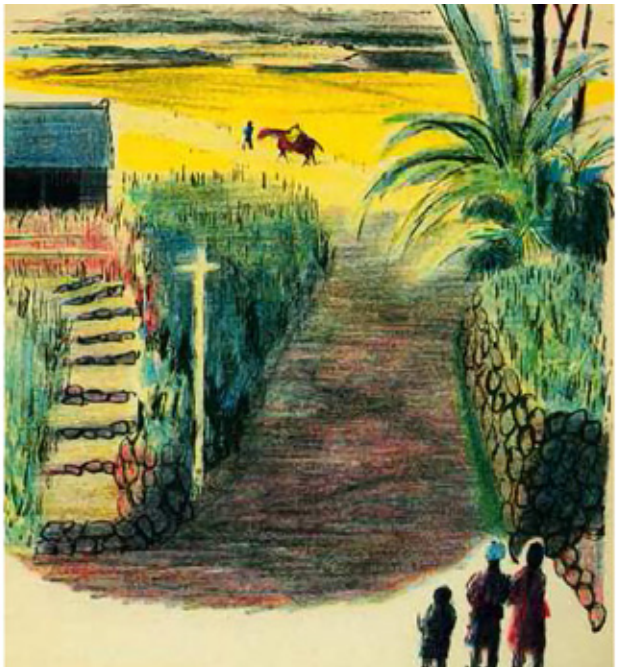

वह लड़की जो समय को लाँघ पाती थी

निधि गुलाटी

यदि समय को एक निरन्तर चलती रेखा के रूप में समझें तो उस पर तीन अवधियाँ तो सीधे-सीधे समझी जा सकती हैं – बीता समय, अभी का समय और आने वाला समय। समय की इस निरन्तर चलती रेखा को हम अलग बिन्दुओं में, कालों में, इतिहास रेखा में समझते-जानते हैं। समय की इस रेखा पर अलग-अलग बिन्दुओं के बीच आ-जा पाने का कुतूहल हमेशा से ही लोगों में रहा है। खासकर बच्चों, दार्शनिकों, वैज्ञानिकों, साहित्यकारों और फिल्मकारों में यह जिज्ञासा दिखती है। आसान शब्दों में हम इसे समय-यात्रा कह सकते हैं।

समय-यात्रा के तरीके

ये समय-यात्राएँ साइंस फिक्शन के साहित्य और फिल्मों में काफी प्रचलित हैं। अक्सर हम इनमें तीन तरीके की समय-यात्रा देख पाते हैं। पहली, जहाँ समय-रेखाएँ जड़वत रहती हैं। इस तरह की यात्रा में अगर हम समय में पीछे चले भी गए, तब भी भविष्य नहीं बदल सकते। मान लो, हम समय में पीछे जाकर सुभाष चन्द्र बोस को ढूँढ लें, तो भी अपने समय में वापिस आकर उनका अजीब परिस्थितियों में खो जाना नहीं बदल पाएगा।

दूसरी, जहाँ समय रेखाएँ गतिशील हैं। ऐसी यात्रा में हम समय में पीछे जाकर घटनाओं को बदल सकते हैं और इससे भविष्य भी बदल जाता है। इससे विरोधोक्ति उत्पन्न होती है। अगर हम पीछे जाकर भगत सिंह की शहीदी को रोक पाएँ तो हो सकता है देश को स्वतंत्रता जैसे मिली, उसका स्वरूप बदल जाए।

तीसरी, समय-यात्रा बहु-ब्रह्माण्ड में दिखती है। इसमें हम अलग-अलग समय में अनेक ब्रह्माण्डों में लुढ़कते-कूदते घूम सकते हैं। कल्पना करो कि ये अलग-अलग दुनियाएँ कैसी होंगी।

क्या तुमने समय-यात्रा की किताबें पढ़ी हैं? उनमें किस तरह की समय-यात्रा है?

सिनेमा भी समय का ही तो खेल है। काफी तस्वीरें खींच लो और उन्हें एक-एक करके ऐसे पेश करो कि एक सैकंड में 24 फ्रेम बदल जाएँ तो तस्वीरों में गति आ जाती है। ऐसा करने से, हर तस्वीर पर लगभग 1/24 सैकंड पर ही नज़र टिकती है। क्यूँकि हमारे देखने की क्षमता इतने कम समय अन्तरालों में फर्क नहीं कर पाती है, इसलिए हमें तस्वीरें लगातार चलती प्रतीत होती हैं। फिल्म पर ऐनिमेशन भी इसी तकनीक का प्रयोग करता है। इसलिए तो सिनेमा को चलचित्र भी कहते हैं, यानी चलते हुए चित्र।

द गर्ल हू लेप्ट थ्रू टाइम

यहाँ हम समय की धारणा से जुड़ी एक खास फिल्म की चर्चा करेंगे – *द गर्ल हू लेप्ट थ्रू टाइम*। इस फिल्म के निदेशक ममोरू होसोदा हैं, जो इस फिल्म को बनाने से पहले स्टूडियो घिब्ली में फिल्में बनाते थे। स्टूडियो घिब्ली और हयाको मियाज़ाकी की जादुई फिल्मों से शायद तुम परिचित होगे। होसोदा के काम में स्टूडियो घिब्ली की छाप साफ दिखती है।

इस फिल्म की नायिका 17 साल की मकोतो कोंनो है। उसके दो बहुत करीबी दोस्त हैं – कौसके, जो अक्लमन्द और भरोसेमन्द है और चियाकी, जो हमेशा मस्त रहता है। हर रोज़ स्कूल के बाद तीनों दोस्त खूब मस्ती करते हैं। साइकिल पर दूर तक जाना, गेंद के साथ कैच खेलना या कैरिओके पर ऊँचे स्वर में गाने गाना, ये सब ही तो इनके काम हैं।

मकोतो की रोज़ की ज़िन्दगी में काफी गड़बड़-सी रहती है। जैसे एक दिन वह स्कूल के क्विज़ में बुरी तरह फेल हो जाती है, खाना पकाने के क्लासरूम में आग लगा देती है, अनगिनतों बार गिरती-पटकती है। और तो और, उसकी साइकिल के ब्रेक फेल हो जाते हैं और वह एक रेल के सामने गिर पड़ती है। यानी उस एक दिन में जितनी चीज़ें गलत हो सकती हैं, सब हो जाती हैं।

फिर एक दिन, मकोतो को स्कूल की विज्ञान प्रयोगशाला में धातु की अखरोटनुमा कुछ चीज़ मिलती है। अचानक उसे पता चलता है कि इस अखरोट में कुछ गज़ब तकनीक है, जिससे उसे समय-यात्रा करने की क्षमता मिल जाती है। यानी अब वह समय को लाँघ सकती है और अपनी ज़िन्दगी के क्रम में आगे-पीछे आ-जा सकती है। शुरू-शुरू में काफी बार मकोतो समय लाँघने की इस क्षमता का इस्तेमाल अपने निजी कामों को बेहतर करने में लगा देती है, जैसे परीक्षा में ज़्यादा अंक लाना, दुर्घटना से बचना। इससे उसकी ज़िन्दगी आसान हो जाती है। वह सभी कुछ जो उसे पहले परेशान करता था, अब वह उसे बदल सकती थी। अपने साथ क्या हो रहा है, उसे 'कंट्रोल' कर पाना वाकई में बड़ी ताकत है। जो पसन्द नहीं है, उसे समय में वापस जाकर बदल दो। आसान है ना?

बहुत अलग-से दृश्य हैं इस फिल्म में – जैसे समय का कुछ पल के लिए ठहर जाना। उस दौरान सब रुक जाता है, आने-जाने वाले लोग वहीं जम जाते हैं, लाल बत्ती बदलती नहीं। केवल समय-यात्री ही चल पाते हैं, बोल पाते हैं। ऐसे ही रुके हुए एक क्षण में चियाकी अपने सभी सच माकोतो के सामने रख देता है। यूँ भी तो, उसे पता चल ही जाना था। यह सच बताते ही, वह समय के नियम की अवहेलना करता है। नियम यह है कि आप आगे या पीछे के समय में यात्रा करते हुए और लोगों को बता नहीं सकते कि आप यात्री हैं। चियाकी के बताते ही, समय पुनः अपनी निरन्तरता का रुख ले लेता है और चियाकी समय में कहीं लुप्त हो जाता है। जैसे ही मकोतो ये बात समझ पाती है, वह एक लम्बी छलाँग लगाती है और हम फिर से फिल्म की शुरुआत में पहुँच जाते हैं। सब कुछ वैसा ही है, जैसे पहले था – कैच खेलना, साइकिल सवारी करना।

कुछ कही और कई अनकही बातें

फिल्म में समय-यात्रा के दौरान काफी जादुई परिदृश्य सामने आते हैं। एक सफेद पृष्ठभूमि पर रंगों भरे परिदृश्य, मानो कोई वॉटर कलर पेंटिंग हो। एक पुल पर घड़ी की सुईयों के साथ अपनी स्थिति बदलते बौने मुझे सबसे ज़्यादा हैरतमन्द लगे। समय लाँघने को ऐनिमेशन में जैसे दर्शाया गया है, वह तो अद्‌भुत है। चियाकी का किरदार अपनी भावनाएँ व्यक्त नहीं करता, पर उसके बेतरतीब बाल कुछ तो बताते हैं उसके बारे में।

बहुत-सी फिल्में किशोरों में होते हुए बदलाव पर आधारित होती हैं। इस फिल्म में परिपक्वता (maturity) की इस साधारण-सी कहानी को समय-यात्रा से जोड़ा गया है। यह बात पूरी कहानी को काफी जटिल बना देती है। साथ ही, फिल्म में इस समय-यात्रा को दिखाना इतना आसान भी नहीं है। वैसे फिल्मों में काफी तरह की समय एडिट तकनीकें इस्तेमाल की जाती हैं, जैसे कि फ्लैशबैक, फैंटसी, देजा वू, कट्स आदि।

लेकिन इस फिल्म में काफी पहेलियाँ हैं। एक पहेली तो ये है कि चियाकी कौन है? क्या चियाकी समय-यात्री है? म्यूजियम में लगी पेंटिंग से उसका क्या रिश्ता है? पेंटिंग को फिर से नया बनाना चियाकी से किस तरह जुड़ा है? मकोतो की दीदी और पेंटिंग को फिर से नए जैसा बनाने का फिल्म की कहानी से क्या लेना-देना है? म्यूजियम में जिसकी छाया दिखती है, वह कौन है?

तारकोविसकि अपनी किताब *टाइम विदइन टाइम* में लिखते हैं कि सिनेमा का मुख्य उद्देश्य यह है, कि जितना कम हो सके उतना ही दिखाया जाए। अगर सिनेमा को हम चिह्नों के नज़रिए से देखें तो सिनेमा का चिह्न वास्तव में, प्रकृति का चिह्न है या वास्तविकता का। ये सवाल अहम नहीं है कि बारीकियाँ क्या है, बल्कि अहम यह है कि छुपा क्या है। *द गर्ल हू लेप्ट थ्रू टाइम* एक ऐसी ही फिल्म है जो या तो कहानी से जुड़ा काफी कुछ गिलाफ के नीचे छिपा रहने देती है, या फिर सपनों की दुनिया में खींच लेती है।

तारकोविसकि मानते हैं कि हम सबसे कम समय के बारे में जानते हैं। वे लिखते हैं कि उन्हें यकीन है कि समय दुतरफा है, आगे भी बढ़ता है और पीछे भी। किसी भी हाल में, ये निरन्तर सीधे चलने वाली रेखा तो नहीं है। उनके शब्दों में, 'काफी सालों से मुझे ये यकीन परेशान करता रहा है कि समय के क्षेत्र में सबसे अनोखी खोज हमारा इन्तज़ार कर रही है।' आगे क्या अचम्भे दिखेंगे, हम क्या खोजेंगे, क्या किश्तियाँ डूबकर भी वापिस सीधी हो जाएँगी – यह खयाल मन को काफी गुदगुदा-सा देता है ना?

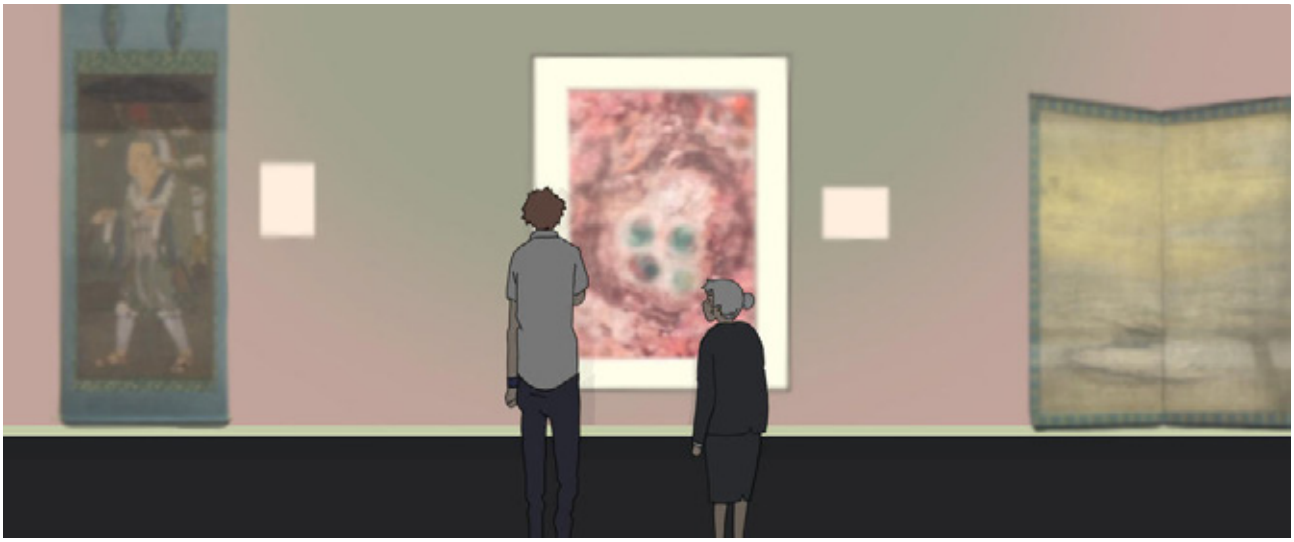

साँप, साँप...

अधिराज जुगरान
तीसरी, असम वैली स्कूल, असम
चित्र: हीरा धूर्वे

एक दिन पापा ऑफिस जा रहे थे। मैं और मम्मा दोनों बराण्डे में खड़े होकर पापा को देख रहे थे।

मम्मा चिल्लाईं, साँप, साँप...।

तभी मम्मा ने देखा कि बराण्डे की सीढ़ियों के नीचे एक लम्बा, काला साँप है।

साँप नाली के अन्दर घुस गया। मम्मा, मैं और पापा वहीं खड़े रहे।

माली भैया दौड़े-दौड़े आए। उनके हाथ में एक लम्बा डण्डा था। भैया ने डण्डे से धक्का दिया तो साँप नाली से निकलकर भागने लगा।

भैया भी उसके पीछे भागे और डण्डे से उसे सर वाली तरफ से दबाया और पूँछ से पकड़ लिया। साँप बहुत ज़ोर-से हिल रहा था। लेकिन भैया को बिलकुल डर नहीं लगा।
हम दूर खड़े थे। मैंने उसकी फोटो खींची। भैया उसे दूर छोड़ आए। उन्होंने बताया कि वो धामन था।

कला के आयाम

चित्रों और शब्दों की अनूठी शृंखला

ग्राफिक नैरेटिव

शेफाली जैन

सितम्बर, 2022 के अंक में हमने 'रूपान्तर' यानी कि 'ऐडैप्टेशन' के ज़रिए कहानी और चित्र के बीच के नाते की बात की थी। आज हम कहानी और चित्र के बीच के नाते का एक अन्य रूप देखेंगे, जिसका नाम है ग्राफिक नैरेटिव। अभी हाल में ही *रिवर ऑफ स्टोरीज़* नामक एक ग्राफिक नैरेटिव छपी है। ये किताब दरअसल पहले 1994 में छपी थी और इसे भारत का सबसे पहला ग्राफिक नैरेटिव माना जाता है। ब्लॉफ्ट पब्लिकेशन ने इसे 2022 में दोबारा छापा है। इसे लिखा और चित्रित किया है ऑरिजित सेन ने।

ग्राफिक नैरेटिव कॉमिक्स का ही एक रूप है। इसमें शब्द और चित्र दोनों की एक शृंखला से कहानी तैयार की जाती है। कुछ ऐसे:

साभार: *ढब्बूजी की धमक*, आबिद सुरती

चित्र 1. कॉमिक किताब से एक स्ट्रिप या हिस्सा

तुमने ज़रूर ऐसी कॉमिक स्ट्रिप पढ़ी-देखी होंगी। इसमें शब्दों और चित्रों का मज़ेदार-सा नाता बनता है। अब मान लो कि ग्राफिक नैरेटिव एक इतनी लम्बी कॉमिक स्ट्रिप है जो एक किताब में तब्दील की जा सके।

शब्द-चित्र शृंखला

रिवर ऑफ स्टोरीज़ ढेर सारी कहानियों की एक खास शब्द-चित्र शृंखला है। इन कहानियों को जिस तरह की शृंखला में गूँथा गया है वह बड़ा ही दिलचस्प है। कहानी शृंखला बनाने के अलग-अलग तरीके हो सकते हैं, जैसे:

1. आपके लिए उन कहानियों की अहमियत के अनुसार
2. उनके नए या पुराने होने के अनुसार
3. उनकी सच्चाई के आधार पर
4. या फिर पूरी तरह से काल्पनिक आधार पर

इन तरीकों में से तुम कौन-सा चुनते हो यह बड़ा अहम सवाल है।

आओ देखें *रिवर ऑफ स्टोरीज़* में जो ढेर सारी कहानियाँ हैं उन्हें दर्शाने के लिए किस तरह की शृंखला को अपनाया गया है और इससे हम क्या समझ पाते हैं। पर पहले...

क्या हैं ये कहानियाँ?

इस किताब में नर्मदा नदी की कहानियाँ हैं। नर्मदा नदी पर बनाए गए बाँध की कहानी, उसके खिलाफ गाँववालों और आदिवासियों के आन्दोलन की कहानी, और इस आवाज़ को दबाने की कोशिश करते अधिकारियों की कहानी। कुछ अनसुनी कहानियाँ भी हैं इसमें, जैसे नर्मदा से जुड़े पशु-पक्षियों की कहानी। जंगल, पर्वत और बादल की कहानी। तो असल में यहाँ एक नहीं, कई सारी कहानियाँ हैं। ठीक एक नदी की तरह, जो कई सारी अलग-अलग धाराएँ लेकर चलती है। इसीलिए तो इस किताब का नाम है *रिवर ऑफ स्टोरीज़* यानी 'कहानियों की नदी'!!

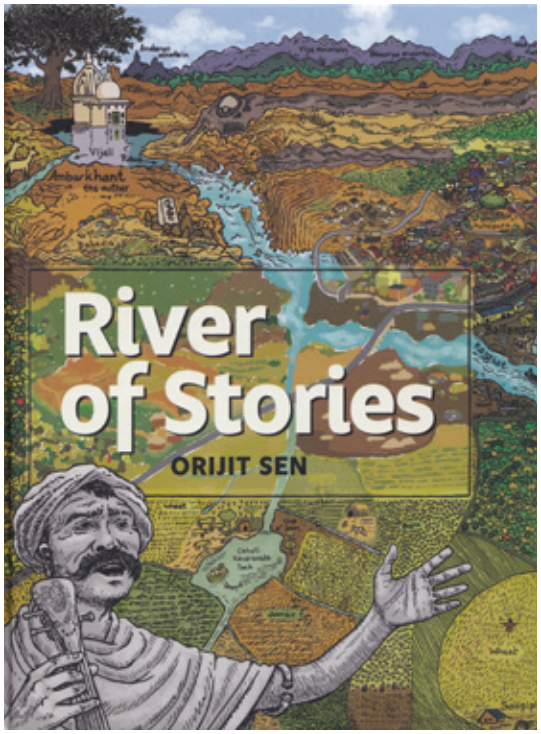

साभार: *रिवर ऑफ स्टोरीज़*, ब्लॉफ्ट पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड

चित्र 2. किताब का कवर

कौन सुना रहा है ये अलग-अलग कहानियाँ?

ये कहानियाँ सुना रहे हैं नर्मदा पर बनते बाँधों से परेशान आदिवासी और किसान। जब अस्सी के दशक में नर्मदा पर बाँध बन रहे थे, तब नर्मदा के किनारे बसे बहुत सारे आदिवासी, किसान और पशु-पक्षी बेघर हो गए थे। उनके घर, पेड़, ज़मीन सब डूब गए थे। पर्यावरण को भी भारी नुकसान हुआ था। इसका विरोध करने के लिए एक बड़ा आन्दोलन शुरू हुआ – नर्मदा बचाओ आन्दोलन। *रिवर ऑफ स्टोरीज़* उसी आन्दोलन की कहानियों को दर्ज करने की एक कोशिश है।

किताब की शुरुआत में हम विष्णु से मिलते हैं। वह एक पत्रकार है जो नर्मदा बचाओ आन्दोलन को देखने जा रहा है। अभी तक उसने केवल उस बाँध की कहानी सुनी है जो नर्मदा पर बन रहा है। यह कहानी लगभग हम सबने सुनी है। यह कहानी कहती है कि बाँध सबके लिए रोज़गार, पानी, बिजली और खुशहाली लाएगा। विष्णु सुनना चाहता है वे दूसरी कहानियाँ जो नर्मदा से जुड़ी हैं, पर सुनाई नहीं देतीं। उन्हें सुनने के लिए उसे खुद नर्मदा के पास जाना होगा। इसलिए विष्णु सफर पर निकला है।

नर्मदा पर पहुँचकर उसे ढेर सारी अनसुनी कहानियाँ सुनने को मिलती हैं। एक है मलगु गायन की कहानी (चित्र 3)। मलगु एक प्रचलित लोक-गायक व कहानीकार है जो अपनी रंगई बजाकर दुनिया की शुरुआत की कहानी बताता है (जब धरती बनी और नर्मदा भी)। दूसरी है रेलकु की कहानी (चित्र 4)।

साभार: *रिवर ऑफ स्टोरीज़*, ब्लॉफ्ट पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड

चित्र 3. मलगु गायन की कहानी का एक पन्ना।

रेलकु आदिवासी है। उसका परिवार नर्मदा पर बाँध के काम के दौरान बेघर हो गया था। इस वजह से उसे काम की तलाश में शहर आना पड़ा। अब वह विष्णु के घर सफाई का काम करती है। तीसरी है आनन्द की कहानी जो शहर छोड़कर नर्मदा बाँध विरोधी आन्दोलन से जुड़ा है। चौथी है आदिवासी और किसान आन्दोलनकारियों (चित्र 5) की कहानी जो नर्मदा बाँध के कारण खोई अपनी ज़मीन और अपने रोज़गार का हक माँग रहे हैं।

कौन-सी कहानियाँ सुनाई जाएँ?

बाँध की कहानी जो हम टीवी और अखबार में सुनते हैं वह केवल एकतरफा हैं। बाँध नदी को एक साधन की तरह देखता है। बाँध नदी से पानी और बिजली तो लेता है, पर नदी की ज़िन्दगी की परवाह नहीं करता। विष्णु जो कहानियाँ अपने सफर के दौरान सुनता है, वे दोतरफा नातों की कहानियाँ हैं। वे नदी को केवल मुनाफे का साधन नहीं मानतीं। नदी से पशु, पक्षी, ज़मीन और आदिवासियों का बहुत गहरा नाता है। यह नाता परस्पर दोस्ती और आदर पर बना है। अगर नदी नहीं रही तो पशु, पक्षी और आदिवासी भी नहीं रहेंगे। यह जानते हुए आदिवासी नदी का खयाल रखते हैं। उसे अपनी माँ रेवा (नर्मदा को मध्य प्रदेश में प्यार से माँ रेवा बुलाते हैं) मानकर उससे उतना ही लेते हैं जितना उन्हें ज़रूरत है। ऑरिजित सेन इस नाते की कहानियों को सुनाना चाहते हैं।

इन कहानियों की कैसी शब्द-चित्र श्रृंखला बनाई जाए?

ऑरिजित के लिए इन अनसुनी कहानियों में शायद कोई पहली या दूसरी नहीं है। सब ज़रूरी हैं और सब एक-दूसरे से गुँथी हुई हैं। शायद इसलिए ऑरिजित ने इनकी एक निराली श्रृंखला तैयार की है। कहानी में विष्णु का सपना, मलगु का गाना, रेलकु की ज़िन्दगी, आनन्द के विचार और आदिवासियों की आवाज़ आती-जाती रहती है। कभी शुरुआत में, फिर दोबारा बीच में और फिर अन्त में भी। नर्मदा नदी इन सब कहानियों के बीच दिखती, छुपती रहती है। वह इन कहानियों को

साभार: *रिवर ऑफ स्टोरीज़*, ब्लॉफ्ट पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड

चित्र 4. रेलकु की कहानी का एक पन्ना।

साभार: *रिवर ऑफ स्टोरीज़*, ब्लॉफ्ट पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड

चित्र 5. आन्दोलन करते आदिवासियों की कहानियाँ।

अपनी लहरों पर उठाए बहती रहती है। कहानियों की यह श्रृंखला लचीली और खुली हुई है। हम जब इस किताब को पढ़ते हैं तो हमें ये सब कहानियाँ बराबरी से सुनाई देती हैं। कोई ज़्यादा या कम नहीं। सवाल यह है कि क्या हम इन कहानियों को नज़रअन्दाज़ कर पाएँगे?

इस किताब का एक पन्ना तो काफी कुछ नक्शे जैसा है (चित्र 6)। इसमें नर्मदा का उद्‌गम स्थान अमरकंटक भी दिखता है और वह जगह भी जहाँ उसे बाँध ने रोका है यानी रेवा सागर डैम भी। इसके अलावा यह नक्शा हमें नदी से जुड़ी और गुँथी ज़िन्दगियाँ भी दिखाता है – जैसे जड़ी-बूटियों के जंगल; साम्भर, नीलगाय के ठिकाने, अनगिनत पक्षियों और तितलियों की प्रजातियाँ, मलगु गायन का पवित्र स्थान, आन्दोलन के पड़ाव, रेवा परिक्रमा का रास्ता, रेलकु का गाँव, बाँध का काम वगैरह। है ना मज़ेदार तरीका जुड़ी हुई कहानियों को साथ लाने का?

तुम भी अपने आसपास की नदी, मोहल्ले या फिर पहाड़ की कहानियों का एक शब्द-चित्र नक्शा तैयार करके देख सकते हो!

कॉमिक्स और ग्राफिक नैरेटिव

बहुत-से लोगों का मानना है कि कॉमिक्स केवल टाइमपास है, इनमें सीखने के लिए कुछ नहीं है। बचपन में कॉमिक्स पढ़ने पर हमें डाँट भी दिया जाता था। पर कॉमिक्स और ग्राफिक नैरेटिव कहानी कहने के बड़े ही निराले रूप हैं। ये सब तरह की कहानियाँ दर्शाते हैं। जीवनी, इतिहास, पर्यावरण, समाज पर काफी दिलचस्प और मज़ेदार ग्राफिक नैरेटिव तैयार किए गए हैं। अगर तुम कलाकार बनना चाहते हो या फिर ग्राफिक नैरेटिव राइटर, तब तो तुम्हें कॉमिक और ग्राफिक नैरेटिव ज़रूर पढ़ना चाहिए। इनको बनाने के अलग-अलग तरीकों पर गौर भी करना चाहिए। तुम्हारे आस-पास की लाइब्रेरी में ये किताबें मिल सकती हैं। नहीं तो तुम लाइब्रेरियन से दरख्वास्त भी कर सकते हो कि वे ऐसी किताबें ऑर्डर करें। यहाँ मैं ग्राफिक नैरेटिव की एक छोटी-सी लिस्ट साझा रही हूँ:

1. Gardener in the Wasteland, Story: Srividya Natarajan, Art: Aparajita Ninan, Publisher: Navayana
2. Green Humour For a Greying Planet, Creator: Rohan Chakravarty, Publisher: Penguin
3. Biksu, Author: Varun Grover, Illustrator: Raj Kumari, Publisher: JugnooPrakashan, Ektara Trust
4. Inquilab Zindabad, Creator: Ikroop Sandhu, Publisher: S & S India
5. Chudail, Creator: Lokesh Khodke, Publisher: BlueJackal

साभार: *रिवर ऑफ स्टोरीज़, ब्लॉफ्ट पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड*

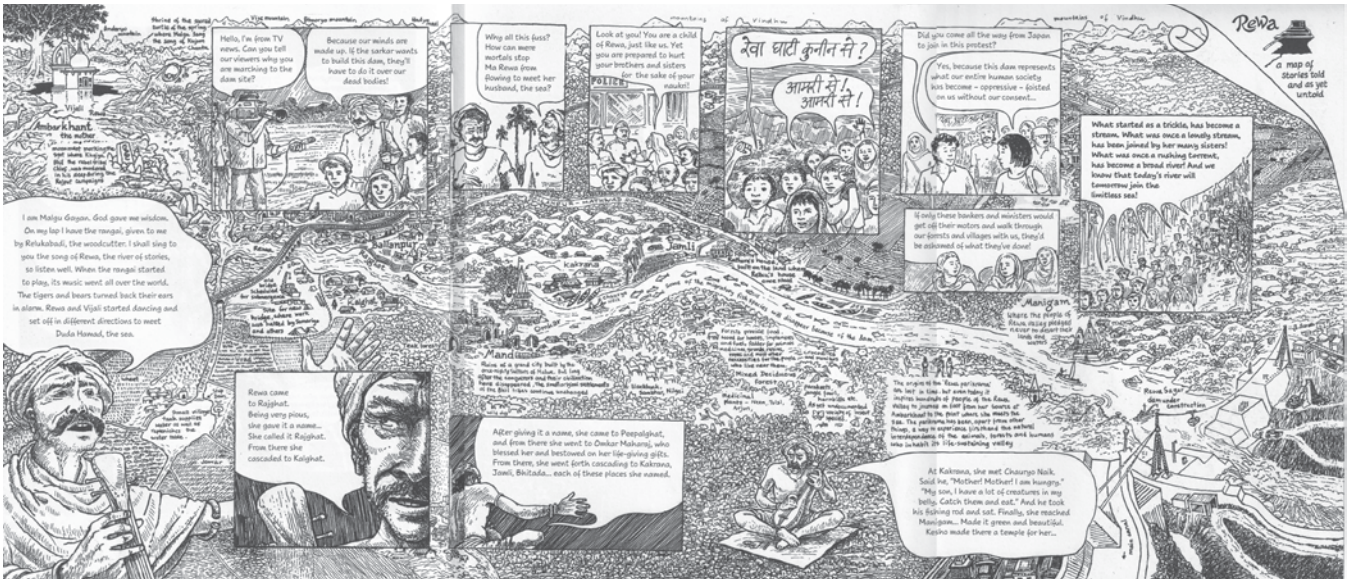

चित्र 6. शब्द-चित्र नक्शा।

ढूँढो अन्तर

चित्र: शुभम लखेरा

इन दो चित्रों में दस से ज़्यादा अन्तर हैं। तुमने कितने ढूँढे?

जुलाई

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

अगस्त

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

सितम्बर

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

जनवरी

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

फरवरी

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28				

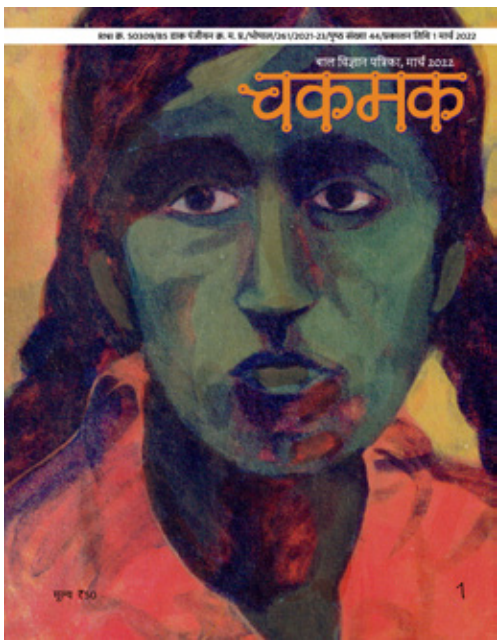

मार्च

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

अप्रैल

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

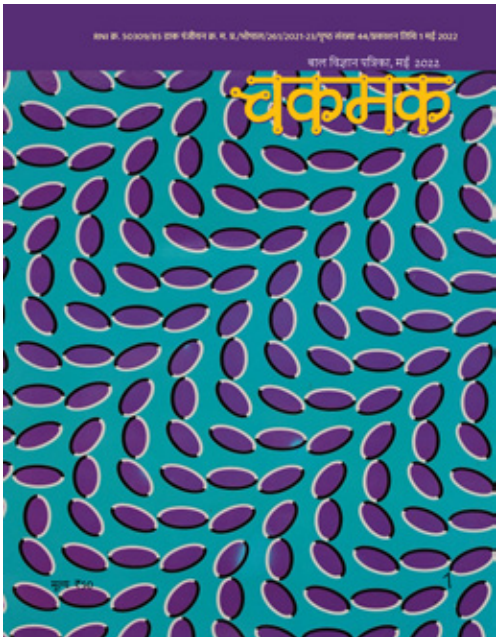

मई

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

जून

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

अक्टूबर

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

नवम्बर

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

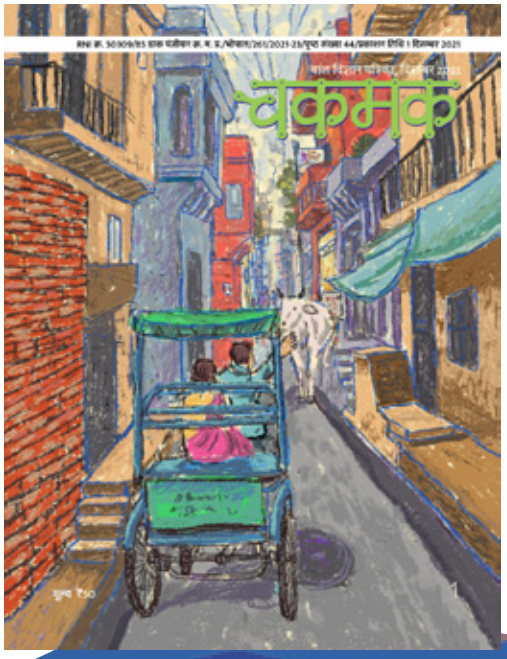

दिसम्बर

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

सुनने से भी मसले हल हो सकते हैं

अमन मदान
अनुवाद: पूनम जैन
चित्र: कनक शशि

एक दिन शिरीन बहुत खुश होते हुए घर वापिस आई। उसने अपना बस्ता फेंका और चिल्लाती हुई बोली, “अम्मी, एक अच्छी खबर है! अगले इतवार हमारा स्कूल हमें घुमाने ले जा रहा है! हम चिड़ियाघर जाएँगे और वहाँ हाथी देखेंगे। हम अपना खाना लेकर जाएँगे और वहाँ इकट्ठे बैठकर पिकनिक मनाएँगे!” शिरीन बहुत उत्साहित थी।

“क्या? इतवार को? लेकिन इतवार को तो तुम्हारे नाना-नानी आ रहे हैं। नहीं, तुम कहीं नहीं जा सकतीं। तुम्हें उनसे मिलने के लिए यहीं रहना होगा,” अम्मी बोलीं।

“लेकिन, सभी जाएँगे। अगर मैं नहीं गई तो मैं अकेली रह जाऊँगी” शिरीन ने कहा और रोने लगी। “जो मैं करना चाहती हूँ वो तुम मुझे कभी करने नहीं देतीं”, ऐसा कहकर वह चिढ़ते हुए चली गई। “इस तरह से बात मत करो मुझसे,” अम्मी पीछे से चिल्लाईं। “तुम इतवार को कहीं नहीं जा रही और अब तुम बाहर खेलने भी नहीं जाओगी।”

ऐसी कितनी ही चीज़ें हैं जिन पर हम एक-दूसरे से झगड़ पड़ते हैं। कभी-कभी शिरीन की तरह हम भी एक चीज़ करना चाहते हैं लेकिन हमारी माँ हमसे कुछ और ही करवाना चाहती हैं। हम एक-दूसरे पर चिल्लाते रहते हैं और किसी

नतीजे पर नहीं पहुँचते। अन्त में जो इन्सान अधिक शक्तिशाली है, उसी की बात चलती है। शिरीन की माँ, आखिर उसकी माँ हैं और अन्त में शिरीन को वही करना होगा जो उसकी माँ कहेंगी।

पर क्या कोई और रास्ता है? आपसी टकराव की स्थितियों में बर्ताव के बारे में अध्ययन करने वाले मनोचिकित्सक और समाजशास्त्री बताते हैं कि अपने मतभेदों के बारे में बात करने के बेहतर तरीके भी हैं। और ज़्यादातर मामलों में हम ऐसा हल खोज सकते हैं जो दोनों वर्गों को सन्तुष्ट कर सकता है। उसके लिए हमें यह समझने की कोशिश करनी होगी:

1. वे असल में चाहते क्या हैं?

"अम्मी, तुम मुझसे क्या करवाना चाहती हो?" शिरीन कुछ देर बाद वापिस आई और पूछने लगी। अम्मी ने उसे ध्यान-से देखा और बोलीं, "हम्म, तो तुम वापिस आ गईं"।

"सच में अम्मी, मुझे समझने दो कि इतवार को नाना-नानी के साथ आप मुझसे क्या करवाना चाहती हो," शिरीन ने कहा।

अम्मी बोलीं, "वे हमें देखने के लिए इतनी दूर से आ रहे हैं। मैं चाहती हूँ कि तुम यहाँ रहो, ताकि वे तुमसे मिल सकें और खुश हो सकें। मैं चाहती हूँ कि वे हम सब के साथ कुछ समय बिता सकें।"

2. वे कैसा महसूस कर रहे हैं?

शिरीन ने अपने आप से पूछा कि उसकी अम्मी को कैसा लग रहा होगा। उसे समझ में आया कि उसकी अम्मी परिवार को इकट्ठा रखना चाहती थीं। वे उन्हें वो खुशी महसूस करवाना चाहती थीं जो सबके साथ रहने से आती है। उसने सोचा, "शायद अम्मी को यह चिन्ता हो कि नाना-नानी को ऐसा लगेगा कि मैं उनके साथ नहीं रहना चाहती और वे दुखी न हो जाएँ।"

शिरीन ने एक पल सोचा और बोली, "अम्मी, मैं भी नाना-नानी के साथ रहना चाहती हूँ। जब वे यहाँ होते हैं तो मुझे बहुत अच्छा लगता है और मुझे सच में उनके आने का बहुत इन्तज़ार है।"

पर साथ ही, मैं अपनी कक्षा के साथ चिड़ियाघर भी जाना चाहती हूँ, शिरीन ने मन ही मन सोचा।

"अच्छा ये बताओ कि इतवार को वे कब आ रहे हैं?"

"उनकी गाड़ी सुबह 6 बजे यहाँ पहुँचेगी। सो 7 बजे तक उन्हें घर आ जाना चाहिए," अम्मी बोलीं।

"ओके, मुझे तो पिकनिक पर जाने के लिए 9 बजे स्कूल पहुँचना है। तो मैं उन्हें मिल सकती हूँ और उनके साथ रह सकती हूँ! मैं उनके लिए अपनी खास चाय बनाऊँगी, जो उन्हें बेहद पसन्द है। और उसके बाद मैं स्कूल जा सकती हूँ। और 3 बजे तक मैं वापिस आ जाऊँगी, तो बाकी का दिन भी उनके साथ ही बिताऊँगी।"

'प्लीज़ मुझे जाने दो ना, अम्मी। अगर मेरी सारी सहेलियाँ चली गईं और मैं रह गई तो मुझे बहुत बुरा लगेगा। और मैं यकीन से कह सकती हूँ कि नाना-नानी भी यही चाहेंगे कि मैं जाऊँ। बाकी का दिन तो मैं उनके साथ ही बिताऊँगी ना।"

अम्मी शिरीन को देर तक देखती रहीं और बोलीं, "ठीक है शिरीन, तुम जा सकती हो।"

अगली बार यदि तुम कुछ चाहो और दूसरा कुछ और चाहे, तो ये कोशिश करके देखना: समझने की कोशिश करना कि असल में वे क्या चाहते हैं और ये भी समझना कि उन्हें कैसा महसूस हो रहा होगा। फिर शायद तुम कुछ ऐसा सुझाव दे सकोगे जो सबको सन्तुष्ट कर देगा।

1. दिए गए चौकोर में तुम्हें बगल में दिए रंगों को इस तरह भरना है कि आड़ी, खड़ी या तिरछी लाइनों में से किसी में भी कोई भी रंग दोबारा ना आए। कैसे करोगे? मदद के लिए बता दें कि नीला रंग 4 खानों में आएगा।

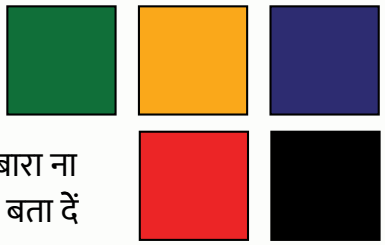

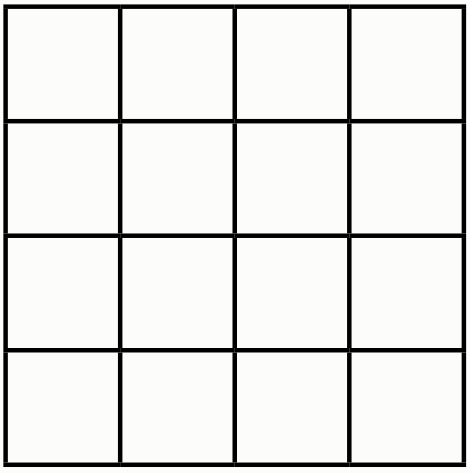

2. निया के पास 3 सेब, 2 केले, 6 चैरी और 2 सन्तरे हैं। ज़ोया के पास 4 पाइनएप्पल, 1 सेब और 4 केले हैं। उनके घर के पास एक बेकरी है जिसमें एक ही तरह के केवल 2 फलों से फ्रूटकेक बनाया जाता है। निया ने बेकरी वाले को 2 सेब, 1 केला, 3 चैरी और 1 सन्तरा दिया। और ज़ोया ने 2 अनानास, 1 सेब और 1 केला दिया। तो बेकरी वाले ने उन्हें कितने केक दिए होंगे?

3. 4 फीट ऊँचा एक पौधा है। वह हर साल 2 फीट बढ़ता है। 10 फीट का होने में उसे कितने साल लगेंगे?

4. इस क्रम की अगली संख्या क्या होगी?

7, 14, 42, 168, ...

5. दी गई ग्रिड में कुछ मसालों के नाम छिपे हैं। तुमने कितने ढूँढे?

पी	ह	का	ली	मि	र्च	क	बा	चा
प	ते	ल्दी	ला	ल	के	ध	नि	या
अ	ज	वा	इ	न	ख	स	ख	स
जी	प	न	ला	अ	म	चू	र	मे
नो	त्ता	ति	य	ता	र	क	लौं	जी
मो	दा	ल	ची	नी	सौं	हीं	ग	रा
टो	का	स	ना	य	फ	ल	मे	स
के	स	र	ल	वि	मु	ले	ठी	थी
म	जी	सों	ठ	पा	त्री	ह	र	ड़

6.

अर्शी: मैं बड़ी हूँ। सारा: मैं छोटी हूँ।

दोनों में से कोई एक झूठ बोल रहा है। क्या इस बातचीत के आधार पर तुम बता सकते हो कि बड़ा कौन है?

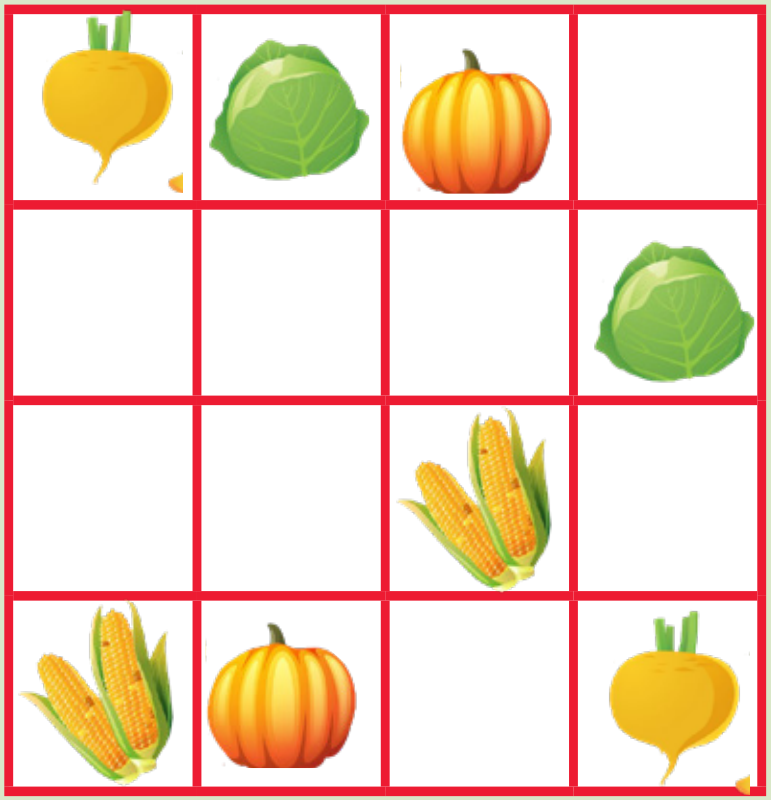

माथापच्ची

7. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग सब्ज़ी आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी सब्जियाँ आएँगी?

8. एक गैराज में कुछ रिक्शे और साइकिलें खड़ी हैं। उनकी कुल संख्या 43 है। यदि उन सभी के टायर बदलने के लिए कुल 108 टायर लगते हों तो बताओ गैराज में कितने रिक्शे हैं और कितनी साइकिलें?

9. एक गडरिया 15 भेड़ों को चराने गया। 2 भेड़ों को शेर खा गया, 2 को कुत्तों ने काट लिया और 3 बीमार हो गईं। तो गडरिए के पास कितनी भेड़ें बचीं?

जवाब पेज 42 पर

फटाफट बताओ

क्या है जो पोंछने से
गीला हो जाता है?

(ाफ़्लीि)

एक दीवार दूसरी दीवार से
कहाँ मिलती है?

(प्र र्निक)

एक चीज़ मैं अलबेली
देती सर्दी में साथ
चार उँगलियाँ और एक अँगूठा
पर हाड़, न माँस

(र्नािफ़ड)

दोनों कान पकड़ के उसके,
हम उसको लटकाते
जो कुछ लाना होता हमको,
हम उसमें भर लाते

(फ़िर्ड)

आहट से इसकी पलक हों भारी
ले गोद में थकन हरे सारी

(द्रींि)

काला तालाब, उबलता पानी
उसमें नहाए आटे की रानी

(ीड़ूप)

क्यों क्यों

हमारे गाँव में जो छोटी जाति के लोग होते हैं उनको अन्दर नहीं आने देते। और जब वह किसी के घर चाय पीते हैं तो वह बाहर बैठते हैं और अपने गिलास-कटोरे को धुलते हैं। हमारे गाँव में यही बर्ताव होता है।

आरुषि, चौथी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

पेज 9 पर तुमने निधि गुलाटी का लेख 'वह लड़की जो समय को लाँघ जाती थी' पढ़ा होगा। इस बार का क्यों-क्यों का सवाल इसी लेख पर आधारित है।

जैसे फिल्म में मकोतो एक तकनीक की मदद से समय में आगे-पीछे जाकर उन चीज़ों को बदल देती है जो उसे परेशान करती थीं। वैसे ही यदि तुम भी समय में आगे-पीछे जा सकते तो क्या बदलते, और क्यों?

मेरे साथ तो ऐसा नहीं हुआ है। लेकिन मैंने ऐसा देखा है कि अमीर गरीब को नीचा दिखाना चाहता है। वह बड़ी कार बाइक व लाकर उसे जलाता है और उसे नीचा दिखाने का प्रयास करता है। उस व्यक्ति को नीचा दिखाता है और गरीबी का एहसास करवाता है। वह उदास हो जाता है। अमीर अकड़कर बात करता है।

गोविंद तवर, सातवीं, शासकीय माध्यमिक विद्यालय देवास

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

ऐसा क्यों होता है भेदभाव
खून तो सबका एक ही है
ऊँच-नीच की दुनिया में
लड़ गया है ये इन्सान
पानी पीना मेरा भेद हुआ है
ऐसा मेरे साथ घटित हुआ है
ऐसा सपने में भी नहीं देखा था
गाँव में आकर देख ही लिया है
ऐसा हुआ था भेदभाव

जयन्ती फस्वार्ण, दसवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, बागेश्वर, उत्तराखण्ड

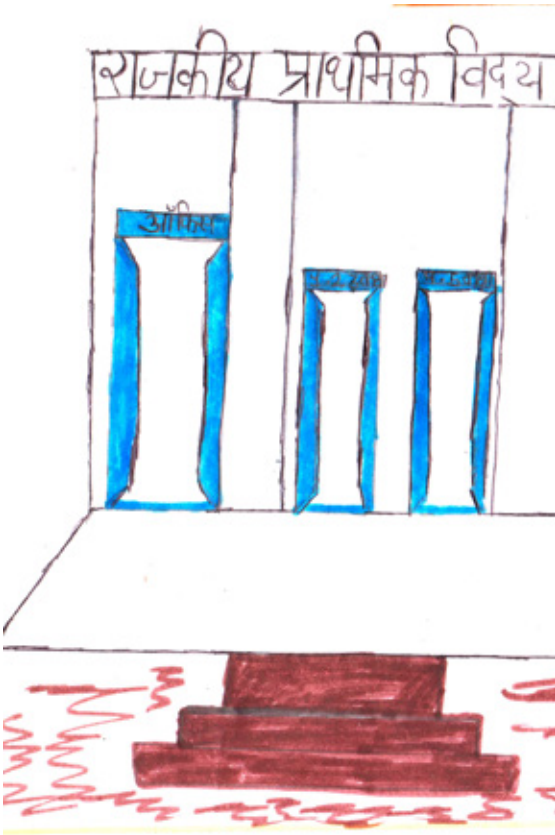

एक बार की बात है। तब मैं कक्षा दो में पढ़ती थी। लेकिन भेदभाव क्या चीज़ है तब मुझे समझ नहीं आता था। लेकिन मैंने एक बार पुन: जब ऐसा होते हुए कक्षा तीन में देखा तो मुझे ये सब देखकर अजीब महसूस हुआ। और मुझे समझ भी आया।

क्योंकि विद्यालय में जितने भी शिक्षक थे, वे सब ऊँची जाति के थे। और मेरे साथ भी जो बच्चे पढ़ते थे उनमें से दो नीच जाति के थे। तो शिक्षक उन बच्चों के साथ काफी बुरा बर्ताव करते थे। साथ ही उन बच्चों के हाथ से कुछ लेते भी नहीं थे। उनको हमेशा पीछे बैठाया जाता था, जबकि वे पढ़ाई में काफी मेधावी थे। जाति के कारण उनके साथ ऐसा व्यवहार किया जाता था। मुझे ये सब देखकर अच्छा नहीं लगता था। शिक्षक मुझसे ही काम कराते थे। चाहे पानी लाना हो, या फिर खाना वे मुझे ही लाने को कहते थे। लेकिन वे साथ ही सलाह भी देते थे कि और बच्चों से ना छुआना।

दीक्षा बोरा, बारहवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, बागेश्वर, उत्तराखण्ड

चित्र: कनिष्का अधिकारी, दसवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, बागेश्वर, उत्तराखण्ड

किसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए यह पूरी तरह से व्यक्ति के विवेक पर निर्भर करता है। अमीरों को गरीब खुद से छोटे लगते हैं। शायद इसलिए वे उनके साथ ठीक से बर्ताव नहीं करते या उन्हें ज़्यादा इज़्ज़त नहीं देते।

वहीं दूसरी तरफ गरीबों को अमीर खुद से बड़े लगते हैं शायद इसलिए वे उन्हें हद से ज़्यादा इज़्ज़त देते हैं और काफी तहजीब से बर्ताव करते हैं।

ऐसे अनुभव कभी भी अच्छे तो नहीं हो सकते। ये व्यवहार किसी की आत्मा को अन्दर तक झकझोर कर रख देता है। यह भेदभाव किसी के दिल में अगर घर कर जाए तो काफी घातक हो सकता है, उस व्यक्ति, समाज व देश के लिए भी। क्योंकि उनकी आगे बढ़ने की इच्छा खतम हो सकती है।

हर्षिता कौशले, बारहवीं, केन्द्रीय विद्यालय देवास, मध्य प्रदेश

चित्र पहेली
बाएँ से दाएँ
ऊपर से नीचे

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

सुडोकू 61

		9	5	1	8			2
5	2				4			8
4					9	3	1	
1		6	8		7	2	3	
7				4			6	9
			3		6	5	7	1
6					3		2	
	8				2		5	
2	1	7					8	

जवाब पेज 42 पर

मेरा पन्ना

सर्दियों के दिन

आँचल
बारहवीं
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
स्यांजी, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

सर्दियों के दिनों में मज़ा तो बहुत है, परन्तु थोड़ी-सी बारिश या बर्फ पड़ गई तो बुरा हाल हो जाता है। शुरू-शुरू में ऐसा होता है कि अन्दर बैठो तो ठण्ड लगती है और बाहर बैठो तो धूप लग जाती है। ऐसा लगता है मानो यह मौसम हमें सता रहा हो।

एक-दो सप्ताह के बाद जब पड़ जाती है ज़ोरों की ठण्ड तो फिर निकलते हैं लोगों के घरों में रज़ाई और कम्बल। जो लोग घर के बाहर कभी न निकलते थे, वो भी सर्दियों में छत और आँगन में मिलते हैं। जिस दिन हो ज़ोरों की धूप तो गाँव की लड़कियाँ और औरतें इकट्ठे होकर मुरब्बा डालती हैं और खाती हैं।

ऐसे चुलबुले-से होते हैं सर्दियों के दिन। यह हमें सताते तो बहुत हैं, पर गर्मियों के दिनों में याद भी बहुत आते हैं।

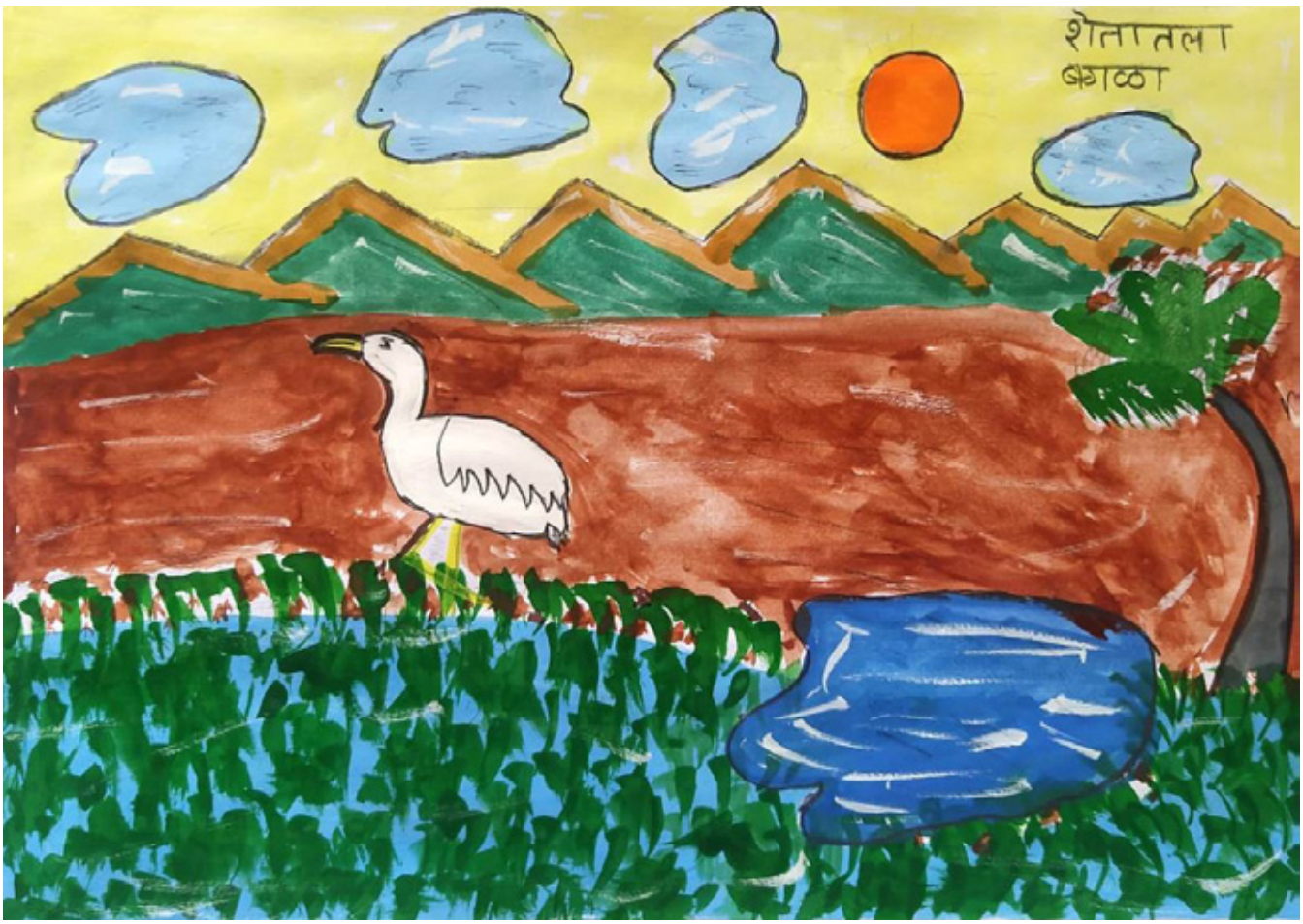

चित्र: रिद्धि अडसूल, चौथी, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चित्र: वंशिका, चौथी, विश्वास स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

छुट्टियों के दिन

रोशन
चौथी
शिव नादर स्कूल
नोएडा, उत्तर प्रदेश

हम छुट्टियों में हिमाचल प्रदेश गए थे। मैं अपनी माँ, पापा के साथ उड़ानों से पालमपुर छोटी नानी के यहाँ गया। हम उनके पास ही रुके। फिर अगले दिन बीर में घूमने गए। उधर बहुत सारे पर्यटक थे। वहाँ पैराग्लाइडिंग और बहुत सारे रेस्टोरेंट भी थे। दूसरे दिन हम धर्मशाला में तिब्बत बौद्ध धर्म मन्दिर गए। वहाँ मैं दलाई लामा मोंक से मिला। हमने उधर प्रार्थना की और मुझे सुकून व शान्ति मिली।

तीसरे दिन हम चाय के बगीचे गए। हम फैक्ट्री में भी गए जहाँ चाय पत्ती से कई तरह की चाय बनती हैं। उसके पास ही में एक बग्गी में मैं और पापा बैठे। हमने वहाँ बहुत मनोरंजन किया। वहाँ का मौसम बहुत अच्छा और ठण्डा था। वहाँ की पहाड़ियों में बर्फ जमी थी। देखकर मन प्रसन्न हुआ। मैं अपना अनुभव बयान नहीं कर सकता।

मेरा पन्ना

मेरी माँ

प्रज्ञा शहा
पाँचवीं
प्रगत शिक्षण संस्थान
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

एक दिन मेरी माँ और पिताजी बाज़ार चले गए थे। वो बाज़ार बहुत दूर था। इसलिए वो दोनों कार में गए थे। उन्होंने सामान ले लिया था। सामान का बिल 300 रुपए आया था। जब वह सामान का बिल कर रहे थे तो पिताजी के पास 300 रुपए छुट्टे नहीं थे। इसलिए उन्होंने 500 रुपए दे दिए।

दुकानदार उनको पैसे दे ही रहा था कि उसका फोन आ गया। उसने 200 रुपए की बजाय 300 रुपए दे दिए। पिताजी जल्दी में थे। इसलिए उन्होंने भी पैसों को नहीं गिना। वह पैसे उठाकर सीधे माँ के हाथ में दे दिए और उन्हें घर आकर छोड़ गए। माँ ने उन पैसों को गिना तो 100 रुपए ज़्यादा थे।

तो माँ ने पिताजी को फोन किया तो पिताजी फोन नहीं उठा रहे थे। इसलिए वे पैदल जाकर 100 रुपए दे आई। इसलिए मुझे मेरी माँ ईमानदार लगती हैं।

चित्र: हेमा कुमारी, दस साल, ग्राम धर्मपुर, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

पेड़ों का बलिदान

चित्र: अनिकेत परमार, सातवीं, सेंट ड्रीम कॉन्वेंट स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

अंशुमान मिश्रा
सातवीं
जे. वी. एम श्यामली, रांची, झारखण्ड

5 जून

एक वर्ष पहले आज ही के दिन हमारे शहर में 1000 पेड़ लगाने का अभियान शुरू हुआ था। वृक्ष पार्टी के नेता जो दो साल से हमारे शहर के मंत्री हैं, उन्होंने ही पहला पेड़ लगाकर इस अभियान का शुभारम्भ किया था। हमारे नेता जी ने एक वर्ष में इस अभियान को आगे बढ़ाने का कष्ट तो नहीं ही किया, पर कुछ महीने पहले जब उनका विशालकाय घर बन रहा था तब डेढ़ सौ पेड़ों को अपना बलिदान ज़रूर देना पड़ा।

यह खबर उन दिनों सुर्खियों में थी और हर जगह नेताजी की बदनामी हो रही थी। सो नेता जी ने अपने बचाव में उस घर को नहीं बनवाया। पर वो पेड़ तो कट ही गए थे। एक समय था जब हमारे शहर में बहुत पेड़ हुआ करते थे। मैंने तो वह समय नहीं देखा। पर मेरे नानाजी से मुझे उस दौर के बारे में सुनने का मौका मिला। और आज जो मेरी आँखों के सामने हैं, वो हैं बड़ी-बड़ी इमारतें।

दुख इस बात का होता है कि नेताजी ने भले ही पेड़ नहीं लगवाए, पर कटवाए क्यों? आज भी याद आती है 5 जून की वह तारीख जिस दिन सभी पेड़ों को चुटकियों में काट दिया गया। फिर बरसात आ गई और वन महोत्सव मनाया गया।

मेरा पन्ना

हमारे खेत पर

रेहान पटेल
छठवीं
देवास, मध्य प्रदेश

एक बार की बात है हमारे खेत पर मज़दूर काम कर रहे थे। वह काम बची हुई लहसुन को निकालकर ट्रॉली में डालने का था। तब मेरी गर्मी की छुट्टियाँ थीं शायद। उस दिन की सुहानी सुबह को देखकर मुझे ऐसा लग रहा था कि आज का दिन बहुत अच्छा जाएगा, मगर हुआ कुछ और ही।

मुझे मेरी मम्मी ने कहा कि एक बड़ी-सी पल्ली को अपनी साइकिल पर रखकर खेत पर जाओ। मैं बड़ी-सी पल्ली को घड़ी करके साइकिल पर रखकर खेत की ओर रवाना हो गया। मेरा घर खेत से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर है। पहले पक्के रास्ते को पार करके कच्चे रास्ते पर जाना होता है। उसके बाद खेत पहुँच जाते हैं। तो फिर क्या था, मैंने साइकिल उठाई और चल पड़ा।

मैंने पक्के रास्ते को पार किया। अभी मैं कच्चे रास्ते पर पहुँचा ही था कि मुझे 5-6 खूँखार कुत्ते दिखाई पड़े। उनको देखकर मैं रुक गया। वो इतने सारे थे और मैं तो अकेला ही था। मैं हिम्मत करके आगे बढ़ा तो काले, सफेद, भूरे सब कुत्ते मुझ पर भौंकने लगे। मैंने सोचा कि इतने सारे खूँखार कुत्ते यहाँ क्या कर रहे हैं? फिर मैंने बहुत हिम्मत करके आगे बढ़ने की सोची। उसके बाद मैंने जो देखा वह देखकर मैं चौंक उठा।

मैंने देखा कि सब कुत्ते एक मरी हुई गाय को खा रहे हैं। यह देखकर मेरा जी मिचलाने लगा। मैं सीधा खड़ा हो गया। तभी पीछे से मुझे किसी की आवाज़ आने लगी। मैं डर गया और सीधा का सीधा ही खड़ा रहा।

फिर मैंने पीछे मुड़कर देखा तो एक गाड़ीवाले अंकल थे। मैं रास्ते में खड़ा था तो मैं साइड में हो गया। वह अंकल मुझे देखकर समझ गए कि मुझे आगे जाना है। उन अंकल ने सारे के सारे कुत्तों को भगा दिया। मैं सब कुछ देख रहा था। उनमें से एक कुत्ता मेरी ओर भागकर आ रहा था तो फिर मैं आगे-आगे भागा और कुत्ता मेरे पीछे-पीछे भागा। भागते-भागते मैं पक्की सड़क पर आ गया। फिर मैंने पीछे मुड़कर देखा तो उस कुत्ते का नामोनिशान नहीं दिख रहा था। मैं सोचने लगा कि देखो मुझ में इतनी ताकत है कि खूँखार कुत्ते भी मुझसे डरते हैं।

फिर मैंने साइकिल खड़ी की तो वह गिर गई। फिर से मैंने साइकिल खड़ी की इस बार मुझसे साइकिल खड़ी हो गई, मगर चल नहीं पाई। फिर मैं पैदल-पैदल खेत पर गया और एक आम के पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया। बैठे-बैठे मैं इस घटना के बारे में सोचने लगा।

मेरा खरगोश

बिलाल अहमद
पाँचवीं
प्राथमिक विद्यालय धुसाह प्रथम
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरे पास एक खरगोश था। वह बहुत प्यारा था। मेरी मम्मी जब उसे पकड़तीं तो वह तखत के नीचे चला जाता। उसे कोई पकड़ नहीं पाता था। जब कभी मेरी मम्मी उसे पकड़ पातीं तो उसे बहुत डाँटतीं। तब वह उदास हो जाता और खाना छोड़ देता और दुबककर बैठा रहता।

उसे हरी घास देते तो वह दो पैरों पर खड़ा होकर खाता। जब उसकी भूख मिट जाती तो वह कूद-कूदकर खेलता। गन्दगी करने की वजह से मेरे पापा ने उसे मेरी बुआ को दे दिया। उस खरगोश को हम आज भी याद करते हैं। जब हम बुआ के यहाँ जाते हैं तो उसे खूब खिलाते हैं।

मेरा पन्ना

चित्र: विमल शर्मा, नौवीं, कुन्दन विद्या मन्दिर, लुधियाना, पंजाब

माथापच्ची जवाब

1.

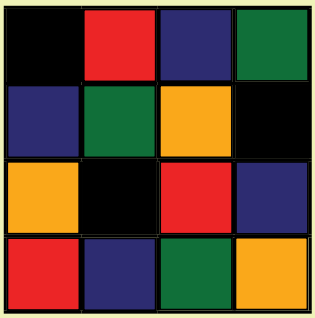

2. बेकरी वाले को कुल 11 फल मिले थे। क्योंकि केक बनाने के लिए एक ही तरह के 2 फल चाहिए थे इसलिए उनसे उसने कुल 4 केक बनाए — एक सेब का, एक केले का, एक पाइनएप्पल का और एक चैरी का।

3. 3 साल, क्योंकि पौधा पहले से ही 4 फीट ऊँचा था।

4. इन संख्याओं में यह पैटर्न है:

7 × 2 = 14

14 × 3 = 42

42 × 4 = 168, इसलिए

168 × 5 = 840

6. चूँकि दोनों की बात में कोई विरोध नहीं है, इसलिए या तो दोनों झूठ बोल रहे हैं या फिर दोनों सच बोल रहे हैं। पर सवाल में दिया है कि कम से कम एक झूठ बोल रहा है। इसलिए इस स्थिति में दोनों झूठ ही बोल रहे हैं। इसका मलतब है कि सारा बड़ी है।

5.

पी	ह	का	ली	मि	र्च	क	बा	चा
प	ते	ल्दी	ला	ल	के	ध	नि	या
अ	ज	वा	इ	न	ख	स	ख	स
जी	प	न	ला	अ	म	चू	र	मे
नो	त्ता	ति	य	ता	र	क	लौं	जी
मो	दा	ल	ची	नी	सौं	हीं	ग	रा
टो	का	स	जा	य	फ	ल	मे	स
के	स	र	ल	वि	मु	ले	ठी	थी
म	जी	सों	ठ	पा	त्री	ह	र	ड़

8.

मान लो कि साइकिल की संख्या = x, रिक्शों की संख्या = y

रिक्शों व साइकिलों की कुल संख्या है x+y = 43 यानी कि x = 43 - y

साइकिल में 2 पहिए होते हैं और रिक्शे में 3। इसलिए पहियों की कुल संख्या 2x + 3y = 108।

इसमें x का मान रखने पर,

2 (43 - y) + 3y = 108

86 - 2y + 3y = 108

Y = 108 - 86 = 22 और x = 43 -22 = 21

तो 22 रिक्शे और 21 साइकिलें थीं।

9. 13 भेड़ें बचेंगी, क्योंकि शेर ने सिर्फ 2 ही भेड़ों को खाया था। बाकी सब तो ज़िन्दा ही हैं ना।

7.

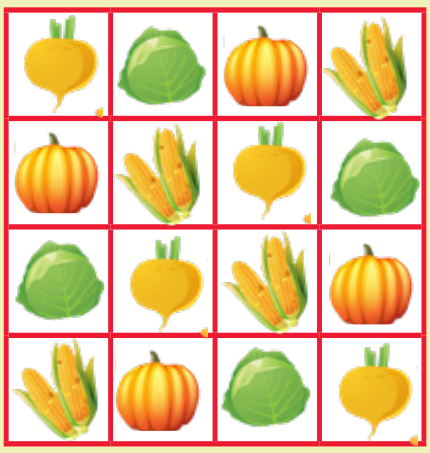

इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

सुडोकू-61 का जवाब

3	7	9	5	1	8	6	4	2
5	2	1	6	3	4	7	9	8
4	6	8	7	2	9	3	1	5
1	9	6	8	5	7	2	3	4
7	3	5	2	4	1	8	6	9
8	4	2	3	9	6	5	7	1
6	5	4	1	8	3	9	2	7
9	8	3	4	7	2	1	5	6
2	1	7	9	6	5	4	8	3

तुम भी जानो

आर्जेन्टीना बना फुटबॉल का वर्ल्ड चैम्पियन

1986 के बाद 18 दिसम्बर, 2022 को आर्जेन्टीना फ्रांस को हराकर फुटबाल का वर्ल्ड चैम्पियन बना। इस जीत में महत्वपूर्ण भूमिका लायोनेल मेसी की भी रही है जो दुनियाभर के सबसे लोकप्रिय फुटबॉल खिलाड़ियों में से एक माने जाते हैं। वर्ल्ड कप के फायनल मैच में 3-3 टाई के बाद पैनल्टी में 4-2 से आर्जेन्टीना ने यह मैच जीता है। अब तुम सोच सकते हो कितना तनाव भरा और मज़ेदार मैच हुआ होगा!

क्वेंटिन ब्लेक हुए 90 साल के

बच्चों की अँग्रेज़ी किताबों के लोकप्रिय चित्रकार क्वेंटिन ब्लेक हाल ही में 90 वर्ष के हुए हैं। 16 वर्ष की उम्र में उनके कार्टून 'पंच' पत्रिका में छपे और उस समय से आज तक उन्होंने चित्र बनाने की गति कम नहीं की। उनके सबसे जाने-माने चित्र शायद रुआल डाल की कहानियों के हैं। क्वेंटिन कहते हैं कि चित्र बनाते समय वे अक्सर खुद किरदारों की भूमिका निभाते हैं – उनके चेहरे के भावों को पहले खुद आज़माते हैं और फिर बनाते हैं। क्वेंटिन को जन्मदिन की ढेर सारी शुभकामनाएँ। हम आशा करते हैं कि वे कई सालों तक बच्चों की किताबों का चित्रांकन करते रहें।

दुनिया का अभी तक का सबसे सख्त पदार्थ क्रोमियम, कोबॉल्ट और निकल तत्वों से बनी एक मिश्र धातु है। तीनों तत्त्वों को लगभग समान मात्राओं में मिलाकर बनी यह धातु बहुत ज़्यादा ठण्ड में भी टूटती नहीं है। बल्कि ज़्यादा ठण्ड के साथ टूटने की बजाय ये और भी सख्त बन जाती है। साथ में यह डक्टाइल (ductile) रह पाती है – यानी कि हम इसे खींचकर तार बना सकते हैं। आम तौर पर ज़्यादा सख्त पदार्थ कम डक्टाइल होते हैं। पर इसमें दोनों गुण हैं। इसलिए इसका उपयोग कई जगहों पर हो सकता है, खासकर अन्तरिक्ष यानों में।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

एक रंग

चन्दन यादव
चित्र: शुभम लखेरा

एक रंग सपने का
एक रंग रात का
बेरंग-सा एक रंग
एक बिना बात का
हर कोई खोज रहा
रंग अपने आप का

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन